



BPSC

TRE 4.0

बिहार लोक सेवा आयोग (BPSC)

भाग - 4 (अ)

मध्य विद्यालय शिक्षक (हिन्दी एवं अंग्रेजी)

हिन्दी



विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	वर्ण विचार	1
2	संज्ञा	5
3	सर्वनाम	7
4	विशेषण	8
5	क्रिया	9
6	वाच्य	16
7	कारक	18
8	संधि	21
9	समास	37
10	उपसर्ग	43
11	प्रत्यय	52
12	शब्द युग्म	60
13	विराम चिन्ह	69
14	तत्सम - तद्भव शब्द	72
15	अव्यय - अविकारी शब्द	74
16	देशज शब्द	77
17	रस	81
18	छंद	83
19	अलंकार	91
20	पर्यायवाची	95
21	वाक्य के लिए एक शब्द	97
22	मुहावरे	103
23	लोकोक्तियाँ	109

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	अपठित गद्यांश	112
25	हिंदी के प्रसिद्ध कवि एवं उनकी रचनाएँ	120
26	हिंदी भाषा में पुरस्कार	123
27	हिंदी भाषा और उसका विकास	128

1

CHAPTER

वर्ण विचार

भाषा – परस्पर विचार विनियम को भाषा कहते हैं ।

- भाषा संस्कृत के भाष् शब्द से बना है । भाष् का अर्थ है बोलना ।
- भाषा की सार्थक इकाई वाक्य है । वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य, उपवाक्य से छोटी इकाई पदबंध, पदबंध से छोटी इकाई पद (शब्द), पद से छोटी इकाई अक्षर व अक्षर से छोटी इकाई ध्वनि या वर्ण है ।
- जैसे – हम शब्द में दो अक्षर (हम) एवं चार वर्ण (ह अ म अ) है ।

लिपि – किसी भाषा को लिखने का ढंग लिपि कहलाता है । हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है । इसकी निम्न विशेषताएँ हैं ।

- (i) यह बाएँ से दायें लिखी जाती है ।
- (ii) प्रत्येक वर्ण का एक ही रूप होता है ।
- (iii) उच्चारण के अनुरूप लिखी जाती है अर्थात् जैसे बोली जाती है, वैसी लिखी जाती है ।

व्याकरण – जिस शास्त्र में शब्दों के शुद्ध रूप एवं प्रयोग के नियमों का निरूपण होता है, उसे व्याकरण कहते हैं ।

वर्ण – हिन्दी भाषा में वर्ण वह मूल ध्वनि है जिसका विभाजन नहीं हो सकता ।

किसी भी भाषा की सबसे छोटी इकाई (ध्वनि) वर्ण कहलाती है ।

जैसे :- क्, च्, ट् अ, इ, उ

वर्ण के भेद :- 2 प्रकार है ।

- (i) स्वर वर्ण
- (ii) व्यंजन वर्ण

स्वर वर्ण :- स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण स्वर कहलाते हैं । हिन्दी वर्णमाला में कुल ग्यारह (11) स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी है ।

जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

स्वरो का वर्गीकरण :- मुख्यतः 5 आधार पर वर्गीकरण किया गया है ।

1. मात्राकाल के आधार पर – 3 प्रकार है ।

(i) ह्रस्व स्वर – वे स्वर जिनके उच्चारण में कम समय लगता है ह्रस्व स्वर कहलाते हैं ।

जैसे – अ, इ, उ, ऋ (कुल संख्या – 4)

नोट :- (इनको एकमात्रिक स्वर, मूल स्वर भी कहते हैं)

(ii) दीर्घ स्वर – वे स्वर जिनके उच्चारण में मूल स्वर से अधिक समय/ दुगुना समय लगता है । वे दीर्घ स्वर कहलाते हैं । आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, (कुल संख्या – 7)

(iii) प्लुत स्वर – जिनके उच्चारण में तीन मात्राओं का समय लगता है । स्वर के प्लुत रूप को दर्शाने के लिए उनके साथ 3 का चिह्न लगाया जाता है ।

जैसे – अ^३, आ^३, इ^३, ई^३, उ^३, ऊ^३, ए^३, ऐ^३, ओ^३, औ^३,

(2) उच्चारण के आधार पर :- (2 प्रकार है)

(i) अनुनासिक स्वर – स्वर का उच्चारण करने पर वायु मुख व नाक दोनों से बाहर निकलती है ।

नोट – अनुनासिक रूप को दर्शाने के लिए चन्द्रबिंदु का प्रयोग होता है ।

जैसे – अँ आँ ईँ ईँ उँ ऊँ एँ ऐँ ओँ औँ

(ii) अननुनासिक/निरनुनासिक स्वर – जब किसी स्वर का उच्चारण करने पर श्वास वायु केवल मुख से ही बाहर निकलती है । वह अननुनासिक/ निरनुनासिक स्वर कहलाता है ।

बिना चन्द्रबिन्दू के अपने मूल रूप में लिखे हुए स्वर अनुनासिक माने जाते हैं ।

जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ,

(3) जिह्वा के आधार पर – (3 प्रकार है)

(i) अग्र स्वर :- उच्चारण करने पर जीभ के आगे वाले भाग में सर्वाधिक कम्पन होना ।

जैसे – इ, ई, ए, ऐ

(ii) मध्य स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के मध्य भाग में कम्पन – अ

(iii) पश्च स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के पिछले भाग में अधिक कम्पन ।

जैसे – आ, उ, ऊ, ओ, औ, औँ

पहचान :- निम्न सारणी के माध्यम से अग्र, पश्च, मध्यम भाग को जाने

अ – मध्य

इ ई ए ऐ – अग्र

आ उ ऊ ओ औ – पश्च

(4) होठों की गोलाई के आधार पर – 2 प्रकार है ।

(i) वृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल हो जाना ।

जैसे :- उ, ऊ ओ, औ

(ii) अवृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल न होकर ऊपर-नीचे फैलना ।

जैसे – अ, आ, इ, ई, ए, ऐ

(5) मुखाकृति के आधार पर – 04 प्रकार है।

(i) संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का कम खुलना।
जैसे – इ, ई, उ, ऊ

(ii) अर्द्ध संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का संवृत से थोड़ा ज्यादा खुलना – ए, ओ

(iii) विवृत – उच्चारण करने पर मुख का सबसे ज्यादा/पूरा खुलना। जैसे – आ

(iv) अर्द्धविवृत – उच्चारण करने पर मुँह का विवृत से थोड़ा कम खुलना।

जैसे – अ, ऐ, औ, ऑ

व्यंजन वर्ण

स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण व्यंजन कहलाते हैं।

हिन्दी वर्णमाला में कुल 35 मूल (33 + 2 उल्क्षिप्त) व्यंजन ध्वनियाँ होती हैं।

जिनको तीन भागों में बाँटा गया है।

(i) स्पर्श व्यंजन – (27) (मूल 25 + 2 उल्क्षिप्त)

(ii) अंतः स्थ व्यंजन – (04)

(iii) ऊष्म व्यंजन – (04)

(i) स्पर्श व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु हमारे मुख के किसी अंग को स्पर्श करते मुख से बाहर निकलती है वह स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं।

स्पर्श व्यंजन को 5 भागों में बाँटा गया है –

(अ) 'क' वर्ग – क् ख् ग् घ् ङ्

(ब) 'च' वर्ग – च् छ् ज् झ् ञ्

(स) 'ट' वर्ग – ट् ठ् ड् ढ् ण्

(द) 'त' वर्ग – त् थ् द् ध् न्

(य) 'प' वर्ग – प् फ् ब् भ् म्

(ii) अंतः स्थ व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर सर्वप्रथम हमारे मुख के अन्दर स्थित स्वर तंत्रियों में कम्पन होता है, व उसके बाद श्वास वायु मुख में बाहर निकलती है तो वह अन्तःस्थ व्यंजन कहलाती है।

कुल अन्तः स्थ व्यंजन – 4 हैं।

जैसे :- य् व् र् ल्

(iii) ऊष्म व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु मुख से बाहर निकलते समय हल्की गर्म हो जाती है, तो वह ऊष्म व्यंजन कहलाता है।

कुल ऊष्म व्यंजन – 4 हैं।

जैसे – श्, स्, ष्, ह्

संयुक्त व्यंजन – इसी श्रेणी में 4 व्यंजन शामिल किये जाते हैं।

क्ष – ष् + अ

त्र – त् + र् + अ

ज्ञ – ज् + ञ् + अ

श्र – श् + र् + अ

व्यंजनों का वर्गीकरण

व्यंजनों का वर्गीकरण – मुख्यतः 2 प्रकार का है।

(1) उच्चारण स्थान के आधार पर

(2) प्रयत्न के आधार पर

(1) उच्चारण स्थान के आधार पर –

स्वर – युक्त व्यंजन व उनका वर्गीकरण–

(अ) उच्चारण स्थान के आधार पर –

उच्चारण स्थान	नाम ध्वनि	वर्ग	व्यंजन	स्वर
कंठ	कंठ्य	क वर्ग	क ख ग घ ङ ह	अ आ
तालु	तालव्य	च वर्ग	च छ ज झ ञ य श	इ ई
मूर्द्धा	मूर्द्धन्य	ट वर्ग	ट ठ ड ढ ण ङ ढ ष र	ऋ ॠ
दौत	दन्त्य	त वर्ग	त थ द ध न ल स	
ओष्ठ	ओष्ठ्य	प वर्ग	प फ ब भ म	उ ऊ
कंठ व तालु	कंठ्य-तालव्य			ए ऐ
दौत व ओष्ठ	दन्तोष्ठ्य		व	
कंठ व ओष्ठ	कंठोष्ठ्य			ओ औ
नासिक्य			ङ्, ञ् ण् न् म्	

2) प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

मुख्यतः 3 भागों में बाँटा गया है –

(i) कम्पन के आधार पर

(ii) श्वास वायु के आधार पर

(iii) उच्चारण के आधार पर

(i). कम्पन के आधार पर व्यंजन का वर्गीकरण

a) अघोष :- वे ध्वनियाँ जिनका उच्चारण करते समय स्वरतंत्रियों में कम्पन नहीं होता है अघोष कहलाते हैं। इसमें वर्ग का पहला,दुसरा वर्ण तथा श, स, ष आते हैं।

b) घोष/सघोष :- वे ध्वनियाँ जिनका उच्चारण करते समय स्वर तंत्रियों में कम्पन होता है घोष/सघोष कहलाते हैं

इसमें वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण तथा य, र, ल, व, ह और सभी स्वर आते हैं।

(ii). श्वास वायु के आधार पर व्यंजन का वर्गीकरण

a) अल्प प्राण :- ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय कम वायु बहार निकलती हो, अल्प प्राण कहलाते हैं।

b) महाप्राण :- ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय अधिक वायु की आवश्यकता होती है, महाप्राण कहलाता है।

इसमें दुसरा, चौथा वर्ण तथा श,स,ब,ह आते हैं।

(iii). उच्चारण के आधार पर –

इस आधार पर व्यंजन 8 प्रकार के होते हैं।

- स्पर्शी व्यंजन (16) क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ
- स्पर्श संघर्शी व्यंजन (4) – च, छ, ज, झ
- संघर्शी व्यंजन (4) – ष, श, स, ह
- नासिक व्यंजन (5) – ङ, ञ, ण, न, म
- उत्क्षिप्त व्यंजन (2) – ड, ढ
- प्रकंपित व्यंजन (1) – र
- पार्श्वक व्यंजन (1) – ल
- संघर्षहीन व्यंजन (2) – य, व

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण तथ्य (“वर्ण विचार” से संबंधित)

दीर्घ स्वर को संयुक्त स्वर के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि दीर्घ स्वरों की रचना प्रायः दोनों स्वरों के मिलने से होती है।

सात दीर्घ स्वरों को भी दो भागों समानाक्षर स्वर, संधि स्वर के रूप में विभाजित किया जाता है।

समानाक्षर स्वर	संधि स्वर
(i) आ – अ + अ	ए – अ + इ
(ii) ई – इ + इ	ऐ – अ – ए
(iii) ऊ – उ + उ	औ – अ + ओ

प्लुत स्वर वर्गीकरण का सर्वप्रथम साक्ष्य पाणिनि की अष्टाध्यायी रचना में मिलता है।

हिन्दी वर्णमाला में कुछ व्यंजन शब्दों के नीचे नुक्ता (बिन्दु) का प्रयोग किया जाता है, जिन्हे आगत/गृहीत व्यंजन कहा जाता है।

आगत व्यंजनों की कुल संख्या 05 होती है।

क – करीब	अंग्रेजी से गृहीत स्वर. ऑ (é) जैसे – कॉलेज, डॉक्टर
ख – खना	
ग – गम	
ज – जरा	
फ – फन, फाइल (अंग्रेजी)	

हिन्दी भाषा में आगत व्यंजनों का आगमन अरबी/फारसी, अंग्रेजी भाषा से हुआ है।

हिन्दी भाषा में नुक्ता व्यंजन की शुरुआत का श्रेय हिन्दी विद्वान “विप्रसाद सितारे हिंद” को जाता है।

- काकल वर्ण के अन्तर्गत, (:) विसर्ग को शामिल किया जाता है।
- वर्त्स वर्णों में न, स, ल को शामिल किया जाता है।
- इसकी कुल संख्या चार होती है।
(1) जिह्वा (2) अधरोष्ठ (नीचे का होंठ)
(3) स्वर तंत्रियाँ (4) कोमल तालु
- तालु उच्चारण स्थान में आने वाले वर्णों को कोमल तालव्य व कठोर तालव्य के रूप में दो भागों में विभाजित किया गया है।
- हिन्दी वर्णमाला में अं (अनुस्वार), अः (विसर्ग) को अयोगवाह वर्ण कहा जाता है। क्योंकि इन वर्णों को न तो स्वरों में जोड़ा जाता है व न ही व्यंजनों में अतः अयोगवाही वर्ण कहलाते हैं।
- हल् चिह्न (,) व्यंजन के स्वर रहित होने का परिचायक है। स्वर रहित व्यंजन के साथ हल् का चिह्न लगाया जाता है या फिर खड़ी पाई वाले व्यंजन चिह्नो की खड़ी पाई हटा दी जाती है। उसके अर्द्धरूप का प्रयोग किया जाता है। जैसे— विद्या, पाठ्य, अपराहन, पट्टा आदि।

- नांद या संवार वर्ण – सभी घोष वर्णों को ही कहा जाता है।
- विवार या श्वास वर्ण – सभी अघोष वर्णों को ही कहा जाता है।
- स्पृष्ट वर्ण – सभी स्पर्श व्यंजन वर्णों को ही कहा जाता है।
- ईशत्स्पृष्ट वर्ण – अन्तस्थ व्यंजन (य,र,ल,व) वर्णों को ही कहा जाता है।
- ईशद्विवृत वर्ण – उष्म व्यंजन (ष, श, स, ह)
- रक्त वर्ण – प्रत्येक वर्ग का पाँचवा वर्ण
- सोष्म व्यंजन वर्ण – प्रत्येक वर्ग का दूसरा व चौथा वर्ण

नोट – हिन्दी वर्णमाला में मूल रूप से 11 स्वर व 33 व्यंजन सहित कुल 44 वर्ण होते हैं।

हिन्दी वर्णमाला की वर्तमान में अपवादित स्थिति को सारणी के माध्यम से समझें।

स्वर	व्यंजन	कुल
स्वर 11	व्यंजन 33	44
–	ड., ढ. + (2) (उत्क्षिप्त व्यंजन)	46
–	अं, अः + (2) (अयोगवाह)	48
–	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र + (4) संयुक्त व्यंजन	52
–	.क खा ग। ज। .फ + 5 गृहीत व्यंजन	57

नोट – सर्वमान्य मत हिन्दी वर्णमाला में कुल 44 वर्ण होते हैं।

उत्क्षिप्त वर्ण

जिन ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा मूर्ध्दा को स्पर्श कर तुरन्त नीचे गिरती है, उन्हें उत्क्षिप्त वर्ण कहते हैं।

जैसे – ड. ढ.

नियम – 1. यदि शब्द की शुरुआत उत्क्षिप्त वर्णों से हो तो लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है।

जैसे – डमरू, ढोलक, डलिया, ढक्कन, डाली

नियम – 2. यदि शब्द के अन्तर्गत इनसे पहले आधा वर्ण आता है तो भी लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है।

जैसे – पण्डित, बुढ़्ढा, अड़्डा, खण्ड, मण्डल आदि।

• उपर्युक्त दोनों नियमों के अलावा प्रत्येक स्थिति में इनके नीचे बिन्दु आता है।

जैसे – पढ.ई, लड.ई, सड़क, पकड़ना, ढूँढना आदि।

रकार/रेफ या र संबंधित नियम

नियम 1. – यदि र् के बाद व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखते हैं अर्थात् जिस व्यंजन वर्ण से पहले र् का उच्चारण किया जाता है, र को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखा जाता है।

जैसे – कर्म, धर्म, वर्ण, दर्शक, स्वर्ग, अर्थात्, पुनर्जन्म, पुनर्निमाण, आशीर्वाद।

नियम 2. – यदि र् से पहले व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के मध्यय में लिखा जाता है।

जैसे – प्रकाश, प्रभात, प्रेम, क्रम, भ्रम, भ्रष्ट, भ्राता



Toppernotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER

संज्ञा

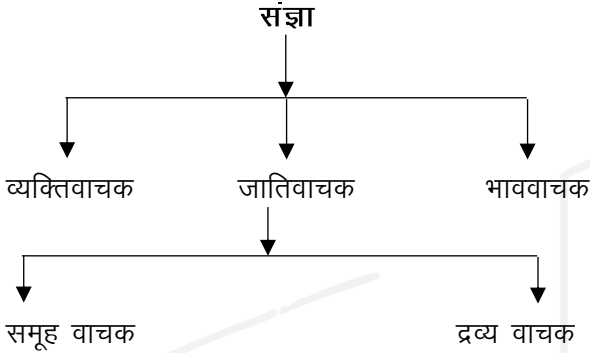


परिभाषा

- किसी प्राणी, स्थान, वस्तु तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाती हैं।
- साधारण शब्दों में नाम को ही संज्ञा कहते हैं।
- जैसे – अजय ने जयपुर के हवामहल की सुंदरता देखी।
- अजय एक व्यक्ति है, जयपुर स्थान का नाम है, हवामहल वस्तु का नाम है। सुंदरता एक गुण का नाम है।

संज्ञा के भेद –

संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद हैं –



1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द से एक ही व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।



- व्यक्तिवाचक संज्ञा विशेष का बोध कराती है सामान्य का नहीं।
- व्यक्तिवाचक संज्ञा में व्यक्तियों, देशों, शहरों, नदियों, पर्वतों, त्योहारों, पुस्तकों, दिशाओं, समाचार-पत्रों, दिन, महीनों के नाम आते हैं।

2. **जातिवाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति के संपूर्ण प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।



प्रायः जातिवाचक वस्तुओं, पशु-पक्षियों, फल-फूल, धातुओं, व्यवसाय संबंधी व्यक्तियों, नगर, शहर, गाँव, परिवार, भीड़ जैसे समूहवाची शब्दों के नाम आते हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा
प्रशान्त महासागर	महासागर
भारत, राजस्थान	देश, राज्य
रामचन्द्र शुक्ल, महावीर द्विवेदी	इतिहासकार, कवि
रामायण, ऋग्वेद	ग्रंथ, वेद
अजय की भैंस	भदावरी, मुर्दा
हनुमानगढ़, नोहर	जिला, उपखण्ड
ग्राण्ड ट्रंक रोड़	रोड़, सड़क

3. **भाववाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द में प्राणियों या वस्तुओं के गुण, धर्म, दशा, कार्य, मनोभाव, आदि का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।



- प्रायः गुण-दोष, अवस्था, व्यापार, अमूर्त भाव तथा क्रिया भाववाचक संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं।
- भाववाचक संज्ञा की रचना मुख्यतः पाँच प्रकार के शब्दों से होती हैं।
 1. जातिवाचक संज्ञा से
 2. सर्वनाम से
 3. विशेषण से
 4. क्रिया से
 5. अव्यय से

जातिवाचक संज्ञा से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
बच्चा	बचपन
शिशु	शैशव
ईश्वर	ऐश्वर्य
विद्वान	विद्वता
व्यक्ति	व्यक्तित्व
मित्र	मित्रता
बंधु	बंधुत्व
पशु	पशुता
बूढ़ा	बुढ़ापा
पुरुष	पुरुषत्व
दानव	दानवता
इंसान	इंसानियत
सती	सतीत्व
लड़का	लड़कपन
आदमी	आदमियत
सज्जन	सज्जनता
गुरु	गौरव
चोर	चोरी
ठग	ठगी

विशेषण से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
बहुत	बहुतायत
न्यून	न्यूनता
कठोर	कठोरता
वीर	वीरता
विधवा	वैधव्य
मूर्ख	मूर्खता
चालाक	चालाकी
निपुण	निपुणता

शिष्ट	शिष्टता
गर्म	गर्मी
ऊँचा	ऊँचाई
आलसी	आलस्य
नम्र	नम्रता
सहायक	सहायता
बुरा	बुराई
चतुर	चतुराई
मोटा	मोटापा
शूर	शौर्य / शूरत
स्वस्थ	स्वास्थ्य
सरल	सरलता
मीठा	मिठास
आवश्यक	आवश्यकता
निर्बल	निर्बलता
हरा	हरियाली
काला	कालापन / कालिमा
छोटा	छुटपन
दुष्ट	दुष्टता

क्रिया से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
बिकना	बिक्री
गिरना	गिरावट
थकना	थकावट / थकान
हारना	हार
भूलना	भूल
पहचानना	पहचान
खेलना	खेल
सजाना	सजावट
लिखना	लिखावट
जमना	जमाव
पढ़ना	पढ़ाई
हंसना	हँसी
भूलना	भूल
उड़ना	ऊड़ान
सुनना	सुनवाई
कमाना	कमाई
गाना	गान

चमकना	चमक
उड़ना	उड़ान
पीना	पान

अव्यय से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

अव्यय	भाववाचक संज्ञा
उपर	उपरी
समीप	सामीप्य
दूर	दूरी
धिक्	धिक्कार
निकट	निकटता
शीघ्र	शीघ्रता
मना	मनाही

- 'अन' प्रत्यय से जुड़े शब्द भाववाचक संज्ञा शब्द माने जाते हैं।

जैसे – व्याकरण वि + आ + कृ + अन
कारण कृ + अन

- कुछ विद्वानों ने संज्ञा के दो अन्य भेद भी स्वीकार किये हैं।

1. **समुदायवाचक संज्ञा** – ऐसे संज्ञा शब्द जो किसी समूह की स्थिति को बताते हैं। समुदाय वाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे – सभा, भीड़, ढेर, मण्डली, सेना, कक्षा, जुलूस, परिवार, गुच्छा, जत्था, दल आदि।

2. **द्रव्य वाचक संज्ञा** – किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध कराने वाले शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे – दूध, घी, तेल, लोहा, सोना, पत्थर, ऑक्सीजन, पारा, चाँदी, पानी आदि।

नोट – जातिवाचक संज्ञा का कोई शब्द यदि वाक्य प्रयोग में किसी व्यक्ति के नाम को प्रकट करने लगे तो वहाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा मानी जाती है।

आजाद – भारत की स्वतंत्रता में चन्द्रशेखर आजाद ने महत्त योगदान दिया था।

सर दार – सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत को जोड़ने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

गाँधी – गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को शुरू किया था।

- ओकारान्त बहुवचन में लिखा विशेषण शब्द विशेषण न मानकर जातिवाचक संज्ञा शब्द माना जाता है।

जैसे –

गरीब गरीबों

बड़ा बड़ों

अमीर अमीरों

3 CHAPTER

सर्वनाम



परिभाषा – भाषा में सुंदरता, संक्षिप्तता, एवं पुनरुक्ति दोष से बचने के लिए संज्ञा के स्थान पर जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह सर्वनाम कहलाता है।



- सर्वनाम शब्द सर्व + नाम के योग से बना है जिसका अर्थ है – सब का नाम।
- सभी संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य में सहजता आ जाती है।
जैसे – अमर आज विद्यालय नहीं आया क्योंकि वह अजमेर गया है।
- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

सर्वनाम के भेद – सर्वनाम के कुल 06 भेद हैं

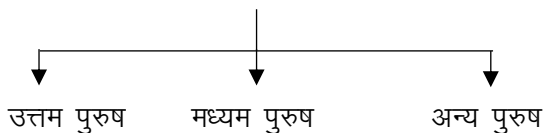
1. पुरुषवाचक
2. निश्चय वाचक
3. अनिश्चय वाचक
4. संबंध वाचक
5. प्रश्न वाचक
6. निजवाचक

1. पुरुषवाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग वक्ता, श्रोता, अन्य तीसरा (कहने वाला, सुनने वाला, अन्य) जिसके लिए कहा जाए, के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।



पुरुषवाचक सर्वनाम को भी तीन भागों में बाँटा गया है

पुरुषवाचक सर्वनाम



- (i) उत्तम पुरुष** – बोलने वाला / लिखने वाला
जैसे – मैं, हम, हम सब।
- (ii) मध्यम पुरुष** – श्रोता/सुनने वाला
जैसे – तू, तुम, आप, आप सब।
- (iii) अन्य पुरुष** – बोलने वाला व सुनने वाला जिस व्यक्ति या तीसरे के बारे में बात करें वह अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाता है।
जैसे – यह, वह, ये, वे, आप।

2. निश्चय वाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम शब्द जो पास या दूर स्थित व्यक्ति या पदार्थ की ओर निश्चितता का बोध कराते हैं। वे निश्चय वाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
पास की वस्तु के लिए – यह, ये।
दूर की वस्तु के लिए – वह, ये।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम शब्द जिससे किसी व्यक्ति या वस्तु के बारे में निश्चितता का बोध नहीं होता है। अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – कोई



- सजीवता के लिए – 'कोई' का प्रयोग
उदा: रमन को कोई बुला रहा है।
- निर्जीवता के लिए – 'कुछ' का प्रयोग
उदा: दूध में कुछ गिरा है।

4. संबंधवाचक सर्वनाम – दो उपवाक्यों के बीच आकर संज्ञा या सर्वनाम का संबंध दूसरे उपवाक्य के साथ दर्शाने वाले सर्वनाम संबंधवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – जिसकी लाठी उसकी भैंस।
जो मेहनत करेगा वो सफल होगा।



5. प्रश्नवाचक सर्वनाम – जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है वह प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाता है।
जैसे – वहाँ गलियारे से होकर कौन जा रहा था ?
कल तुम्हारे पास किसका पत्र आया था ?



6. निजवाचक सर्वनाम – ऐसे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग स्वयं के लिए किया जाता है, निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – आप, स्वयं, खुद, अपना।
जैसे – मैं अपने आप चला जाऊँगा।



- सर्वनाम में आप शब्द का प्रयोग विभिन्न सर्वनामों में किया जाता है जिसका सही प्रयोग निम्न तरीकों से जाना जा सकता है।
 - (i) अगर 'आप' शब्द का प्रयोग 'तुम' शब्द के रूप में किया जाता है तो – मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।
 - (ii) 'आप' शब्द का प्रयोग स्वयं के अर्थ में होने पर – निजवाचक सर्वनाम होगा।
 - (iii) आप शब्द का प्रयोग किसी अन्य व्यक्ति से परिचय करवाने के लिए प्रयुक्त हो तो वाक्य में अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।



परिभाषा

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्दों को विशेषण कहा जाता है।

जो शब्द विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहा जाता है और जिसकी विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहा जाता है। जैसे – छोटा जादूगर करतब दिखा रहा है।

यहाँ छोटा शब्द विशेषण है तथा जादूगर विशेष्य (संज्ञा) है।

विशेष – विशेषण की पहचान का तरीका

किसी भी वाक्य में कैसा/कैसी/कैसे अथवा कितना/कितनी/कितने शब्दों से प्रश्न किये जाने पर इसके उत्तर के रूप में जो कोई भी शब्द लिखा जाता है। यह विशेषण माना जाता है।

जैसे –

(i) अंकित कैसा लडका है ?

उत्तर – अंकित अच्छा/बुरा/भला/शैतान/चंचल लडका है।

(ii) हरी तुम्हारे पास कितनी गायें हैं ?

उत्तर – मेरे पास पाँच/दस/सौ/हजारों गायें हैं।

विशेषण के भेद – विशेषण मूलतः चार प्रकार के होते हैं।

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. संकेतवाचक (सार्वनामिक) विशेषण
5. व्यक्ति वाचक विशेषण

1. गुणवाचक विशेषण

ऐसे विशेषण शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम के रंग, रूप, गुण, दोष, आकार, दशा, स्थिति, स्थान, काल, समय, आदि की विशेषता को प्रकट करते हैं, वहाँ गुणवाचक विशेषण माना जाता है।

जैसे – कृष्णमृग, सुन्दर बालिका, भले लोग, गंदी बस्ती, बड़ा लडका, पुराना मकान आदि।

2. संख्यावाचक विशेषण

जो विशेषण शब्द किसी पदार्थ की संख्या को प्रकट करे। एक, दूसरी, चौगुनी, दोनों, शतक, दर्जनों, अनेक आदि।

3. परिमाण वाचक विशेषण

ऐसे विशेषण शब्द जो किसी पदार्थ में मात्रा को प्रकट करते हैं उनमें परिमाण वाचक विशेषण माना जाता है।

जैसे – दो लीटर तेल, हजार टन गेहूँ, थोडा सा पानी



4. सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण

विशेषण के रूप में प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम को सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

जैसे – (i) यह किताब मेरी है। (ii) वह लडका खाना खा रहा है। (iii) जो लोग मेहनत करते हैं वे अवश्य अपनी मंजिल पाते हैं।

5. व्यक्तिवाचक विशेषण

ऐसे शब्द जो मूल रूप से व्यक्तिवाचक संज्ञा हैं परन्तु वाक्य में विशेषण का काम करती हैं उन्हें व्यक्तिवाचक विशेषण कहते हैं।

उदा: नागपुरी संतरे, कश्मीरी सेब, बनारसी साड़ी

विशेषण की अवस्थाएँ – 3 होती हैं।

(i) **मूलावस्था** – जो विशेषण शब्द अपने मूल रूप में लिखा जाता है।

जैसे – अतुल एक अच्छा लडका है।

(ii) **उत्तरावस्था** – जब कोई विशेषण शब्द दो पदार्थों की तुलना करने के लिए प्रयुक्त होता है।

जैसे – (i) गंगा यमुना से पवित्र नदी है।

(ii) मानसी पटुतर लडकी है।

पहचान – जब किसी विशेषण शब्द से पहले 'से' शब्द लिखा हो अथवा विशेषण के बाद 'तर' प्रत्यय जुड़ा हो तो वहाँ उत्तरावस्था मानी जाती है।

(iii) **उत्तमावस्था** – जब कोई विशेषण शब्द अनेक पदार्थों में से किसी एक को चुनने में काम आता है, वहाँ उत्तमावस्था मानी जाती है।

पहचान – जब विशेषण शब्द से पहले सबसे शब्द या विशेषण के बाद तम/इष्टा/तरीन प्रत्यय लगा हो वहाँ उत्तमावस्था होगी।

जैसे – (i) स्नेहा कक्षा की पटुतम बालिका है।

(ii) नवीन सबसे अच्छा लडका है।

(iii) विद्यालय में व्यवस्थाएँ बेहतरीन हैं।

प्रविशेषण

ऐसे शब्द जो किसी विशेषण की भी विशेषता को प्रकट करते हैं, वे प्रविशेषण कहलाते हैं।

जैसे – (i) वह बहुत तेज दौड़ता है।

(ii) अपनी अत्यंत सुंदर बालिका है।

5 CHAPTER

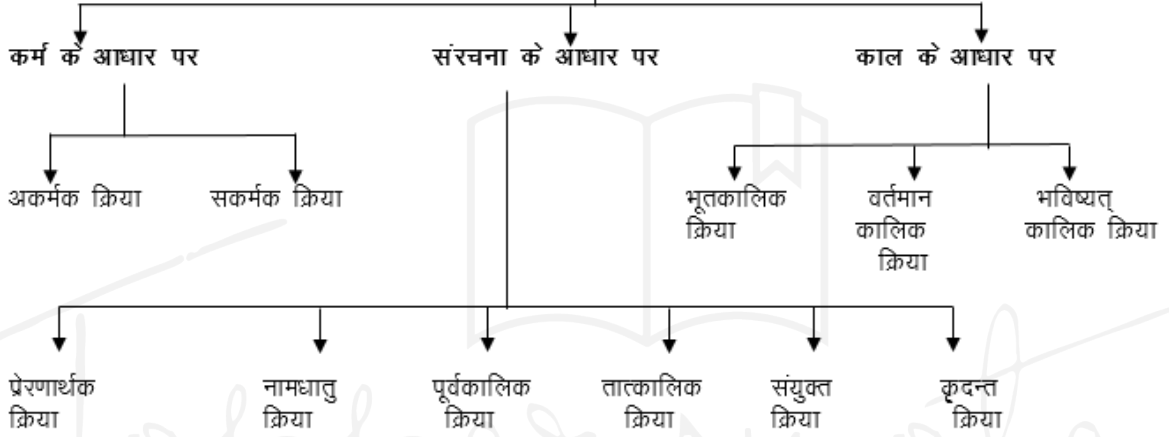
क्रिया



- वाक्य में जिस शब्द या शब्द-समूह से किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं, जैसे – खाना, पीना, पढ़ना, सोना, जाना।
- क्रिया का अर्थ हैं करना। क्रिया के बिना कोई वाक्य पूर्ण नहीं होता है। किसी वाक्य में कर्ता, कर्म तथा काल की जानकारी भी क्रिया पद के माध्यम से होती है। हिंदी भाषा की जननी संस्कृत हैं तथा संस्कृत में क्रिया रूप को 'धातु' कहते हैं।

- **धातु** – हिंदी क्रिया पदों का मूल रूप ही 'धातु' है। धातु में 'ना' जोड़ने से हिंदी के क्रिया पद बनते हैं।
जैसे – पढ़ + ना = पढ़ना, उठ + ना = उठना।
○ मोहन खाना खा रहा है।
○ हवा बह रही है। (करना-हवा बहने की क्रिया कर रही है।)
उपर्युक्त वाक्यों में 'खा रहा है' 'बह रही है' क्रियापद है।

क्रिया के भेद



वाक्य में कर्म की संभावना के आधार पर भेद

अकर्मक और सकर्मक क्रिया – किसी क्रिया के करने हेतु कर्म की आवश्यकता/संभावना होने या न होने के आधार पर क्रिया के मुख्यतः दो भेद हैं – सकर्मक और अकर्मक।

पर ही पड़ता है और ये क्रियाएँ बिना किसी कर्म के केवल कर्ता के द्वारा ही सम्पन्न हो सकती हैं।

(क) अकर्मक क्रिया

जिस वाक्य में क्रिया का फल कर्म पर न पड़कर केवल कर्ता पर ही पड़ता है अर्थात् जिस क्रिया के करने में कर्म की आवश्यकता ही नहीं होती है, बिना किसी कर्म के क्रिया सम्पन्न हो सकती है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं, जैसे –

- रमा सोती है।
- नरेश दौड़ रहा है।
- चिड़िया उड़ रही है।
- बच्चा रोता है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'सोती है', 'दौड़ रहा है', 'उड़ रही है', 'रोता है' क्रियाओं के फल का प्रभाव क्रमशः रमा, नरेश, चिड़िया और बच्चा कर्ता-पदों

अकर्मक क्रिया को भी पुनः दो भेदों में बाँट दिया जाता है।

(i) **अपूर्ण अकर्मक क्रिया** – जिस क्रिया के साथ किसी कर्म की तो आवश्यकता नहीं होती पर किसी पूरक शब्द की आवश्यकता होती है। वह अपूर्ण अकर्मक क्रिया मानी जाती है।

नोट – लगना, होना, निकलना ये अपूर्ण अकर्मक क्रिया को प्रदर्शित करने वाली क्रियाएँ हैं।

जैसे –

- भेड़ प्यासी थी।
- मैं एक छात्र हूँ।
- वह बड़ा ईमानदार निकला।
- वह डरावना लगता है।

होना

लगना, निकलना

(ii) पूर्ण अकर्मक क्रिया – जिस क्रिया के साथ कर्म व पूरक शब्द दोनों की आवश्यकता न हो, वह पूर्ण अकर्मक क्रिया कहलाती है।

जैसे –

- कोयल कूक रही हैं।
- बच्चा रो रहा है।
- तोता आसमान में उड़ता है।

नोट – पूर्ण अकर्मक क्रिया में क्या शब्द से प्रश्न किए जाने पर कोई भी काल्पनिक उत्तर नहीं निकलता है।

(ख) सकर्मक क्रिया

जहाँ क्रिया के घटित होने की प्रक्रिया में कर्म की आवश्यकता होती ही है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।



सकर्मक क्रिया कर्म के बिना सम्पन्न हो ही नहीं सकती, जैसे –

1. राम पत्र लिखता है।
2. लडके ने बेर खाए।
3. मोहित पानी पीता है।
4. अध्यापक प्रश्न पूछते हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में 'लिखना', 'खाना', 'पीना', 'पूछना' क्रियाओं का प्रभाव क्रमशः पत्र, बेर, पानी व प्रश्न कर्मपदों पर पड़ रहा है, क्योंकि इनके बिना क्रिया पूर्ण हो ही नहीं सकती, अतः ये सकर्मक क्रियाएँ हैं। सकर्मक क्रिया की पहचान के लिए क्रिया से पहले 'क्या', 'किसको' लगाकर प्रश्न पूछा जाता है और उसका कोई-न-कोई उत्तर अवश्य आता है और वह उत्तर ही कर्म होता है, और वह क्रिया सकर्मक होती है, राम क्या लिखता है? (पत्र), लडके ने क्या खाए? (बेर), मोहित ने क्या पिया? (पानी)।

(i) अपूर्ण सकर्मक क्रिया – जिस क्रिया के साथ कर्म के अलावा भी किसी पूरक शब्द की आवश्यकता बनी रहती है, तो वहाँ अपूर्ण सकर्मक क्रिया मानी जाती है।

जैसे –

- हमने उसे सरपंच बनाया।
- मैं उसे बहन मानता हूँ।
- हम उसे ईमानदार समझते हैं।

पहचान – अपूर्ण सकर्मक क्रिया की श्रेणी में चयन (बनाना), चुनना, मानना, समझना आदि क्रियाएँ वाक्य के अन्त में प्रयुक्त होती हैं।

(ii) पूर्ण सकर्मक क्रिया – जिस क्रिया के साथ केवल कर्म की ही आवश्यकता पड़ती है, अन्य किसी पूरक शब्द की नहीं, वहाँ पूर्ण सकर्मक क्रिया होती है।

जैसे –

- बच्चा खेल रहा है। (क्रिकेट)
- तुमने जीता। (मैच)
- तुमने रोका। (रास्ता)

पहचान – वाक्य में प्रयुक्त किसी क्रिया वाचक शब्द से पहले क्या शब्द से प्रश्न करने पर यदि उसका कोई काल्पनिक उत्तर प्राप्त हो जाता है, तो वहाँ प्रयुक्त क्रिया पूर्ण सकर्मक क्रिया मानी जाती है।

पूर्ण सकर्मक क्रिया के पुनः दो उपभेद कर दिये जाते हैं।

- (i) एक कर्मक क्रिया
- (ii) द्वि कर्मक क्रिया

(i) एक कर्मक क्रिया

जिस वाक्य में क्रिया के साथ एक कर्म प्रयुक्त हो, उसे एक कर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे – 'माँ पढ़ रही है।' (यहाँ माँ के द्वारा एक ही कर्म पढ़ना हो रहा है।)

- उसने सेब व संतरे खरीदे।
- मैंने गाड़ी खरीदी।

कर्म खरीदना

पहचान – यदि किसी वाक्य में केवल क्या प्रश्न का ही उत्तर प्राप्त हो रहा हो, तो वहाँ प्रयुक्त क्रिया एक कर्मक क्रिया मानी जाती है।

(ii) द्वि कर्मक क्रिया

जिस वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्म प्रयुक्त हो, उसे द्वि कर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे – अध्यापक छात्रों को कम्प्यूटर सिखा रहे हैं।

क्या सिखा रहें हैं? – कम्प्यूटर, किसे सिखा रहे हैं? (छात्रों को) (छात्र सीख रहे हैं) इस प्रकार दो कर्म एक साथ घटित हो रहे हैं।

- सुमन अपनी बहन को हिंदी सिखाती हैं।
- अध्यापक ने छात्रों को हिंदी पढ़ाई।

पहचान – जब किसी वाक्य में किसे, क्या, किसको इन सभी प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हो रहें हो, तो वहाँ प्रयुक्त क्रिया द्विकर्मक क्रिया मानी जाती है।

- द्विकर्मक क्रिया में प्रथम कर्म अप्राणीवाचक (निर्जीव) तथा द्वितीय कर्म प्राणीवाचक (सजीव) होगा।

क्रिया की पूर्णता के आधार पर भेद



अपूर्ण क्रिया –

कुछ क्रियाओं का अपने-आप में अर्थ पूर्ण ही नहीं होता, इसलिए अर्थ पूर्ण करने के लिए किसी अन्य 'पूरक' शब्द पर निर्भर होना होता है जो क्रिया न होकर संज्ञा या विशेषण पद होता है, ऐसी क्रियाओं को अपूर्ण क्रिया कहते हैं, अर्थात् क्रिया अपना अर्थ स्वयं न देकर संज्ञा, विशेषण पद से ही दे पाती है, जैसे—

- अजीत श्याम को मूर्ख समझता है। ('मूर्ख'—विशेषण के बिना क्रिया 'समझता है' का अर्थ स्पष्ट नहीं होगा।)
- अशोक जी हमारे गुरु थे। (गुरु—संज्ञापद के बिना 'थे' का अर्थ स्पष्ट नहीं होता।)

स्पष्ट है कि इन वाक्यों में प्रयुक्त पूरक (मूर्ख, गुरु—दोनों संज्ञापद) का लोप कर देने से वाक्य में पूर्णता नहीं आती। ऐसे पूरक कर्मपूरक कहे जाते हैं, जो विशेषण और संज्ञा दोनों ही हो सकते हैं।

पूर्ण क्रिया –

जिस क्रिया-पद से क्रिया का अर्थ स्पष्ट हो जाए, पूरक के रूप में गैर-क्रियापद (संज्ञा-विशेषण) की आवश्यकता नहीं हो, उसे पूर्ण क्रिया कहते हैं, जैसे—

1. लडका सोता है।
2. लडका पढता है।

यहाँ 'सोता है', 'पढता है' क्रियापद से पूर्ण अर्थ निकल जाता है। ये दोनों पद क्रियापद ही हैं। अतः ये पूर्ण क्रियाएँ हैं।

ध्यान देने योग्य बातें – हिंदी में निम्न सोलह क्रियाएँ ऐसी क्रियाएँ हैं, जिनके साथ दोनों कर्म प्रयुक्त किये जाते हैं। अतः इन्हें नित्य द्विकर्मक क्रिया माना जाता है।

- | | |
|---------------|--------------|
| 1. दुहना | 2. माँगना |
| 3. पकाना | 4. सजा देना |
| 5. रोकना | 6. पूँछना |
| 7. चुनना | 8. कहना |
| 9. उपदेश देना | 10. जीतना |
| 11. मथना | 12. चुराना |
| 13. ले जाना | 14. हरण करना |
| 15. खिंचना | 16. ढोना |

क्रिया की संरचना के आधार पर भेद

प्रेरणार्थक क्रिया

जहाँ कर्ता खुद क्रिया को न करके दूसरे को क्रिया करने की प्रेरणा देता है, वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया होती है। यहाँ कर्ता भी



क्रिया तो करता है किन्तु वह प्रेरणा देने की क्रिया करता है। प्रेरणार्थक क्रियाओं में 'वा' लगता है।

सरपंच ने गाँव में तालाब बनवाया।

नोट – इसमें सरपंच ने स्वयं कार्य नहीं किया, बल्कि अन्य लोगों को प्रेरित कर उनसे तालाब का निर्माण करवाया, अतः यहाँ प्रेरणार्थक क्रिया है।

- नरेश ने नाई से बाल कटवाए।
 - सुनीता ने अर्चना से पत्र लिखवाया।
 - मोहन ने माली से दूब कटवाई।
- सभी प्रेरणार्थक क्रियाएँ सकर्मक होती हैं।

मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रिया

मुख्य क्रिया के अर्थ को पूरा करने में सहायता करने वाला क्रियापद सहायक क्रिया कहलाता है, जैसे –

- मैं गया हुआ था। (यहाँ गया मुख्य क्रिया है तथा हुआ था सहायक क्रिया है।)
- सुरेश सुन रहा था। (सुन— मुख्य क्रिया है तथा रहा था— सहायक क्रियाएँ)

नामधातु क्रिया

जब संज्ञा एवं विशेषण अर्थात् नामपद शब्दों के अंत में प्रत्यय जोड़ने पर किसी क्रिया का निर्माण होता है, तब वह नाम धातु क्रिया होती है। जैसे –

- सेठ ने मकान हथियाया। (हाथ—संज्ञापद)
- मुझ पर दृश्य फिल्माया। (फिल्म—संज्ञापद)
- लडकी बतियाई। (बात संज्ञापद)

हाथ (संज्ञा) – हथिया (नाम धातु) हथियाना (क्रिया)

अपना (सर्वनाम) – अपना (नाम धातु) अपनाना (क्रिया)

जैसे – रोहित, सुनीता के विवाह की जिम्मेदारी को अपना चुका है।

संज्ञा से निर्मित नामधातु सर्वनाम से निर्मित नामधातु

हाथ	– हथियाना	अपना	– अपनाना
लाज	– लज्जाना	विशेषण से निर्मित नामधातु	
बात	– बतियाना	ठण्डा	– ठण्डाना
लात	– लतियाना	साठ	– सठियाना
रंग	– रंगना	गर्म	– गर्माना
शर्म	– शर्माना		

पूर्वकालिक क्रिया

जब कर्ता एक कार्य समाप्त कर दूसरा कार्य आरम्भ करता है, तब पहली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। पूर्वकालिक क्रिया के अंत में कर लगता है— सोकर, उठकर, जाकर आदि।

- बच्चे दूध पीकर सो गए।
(सोने से पहले दूध पीया।)
- रमेश खाना खाकर विद्यालय गया।
- रमेश खाना खाने के बाद विद्यालय गया।

लेकिन 'रमेश ने खाना खाया और उसके बाद विद्यालय गया' वाक्य में पहली क्रिया पूर्वकालिक नहीं है, बल्कि दोनों ही क्रियाएँ स्वतंत्र क्रियाएँ हैं क्योंकि दोनों क्रियाएँ दो अलग-अलग उपवाक्यों की क्रियाएँ हैं।

तात्कालिक क्रिया

यह क्रिया भी मुख्य क्रिया से पहले सम्पन्न हो जाती है। इसमें और मुख्य क्रिया में समय का अंतर नहीं होता, किन्तु पहली क्रिया के घटने के तत्काल बाद दूसरी क्रिया के घटने का बोध होता है जो 'ही' निपात से संभव होता है।

- वह खाना खाते ही (तात्कालिक क्रिया) सो गया।
- वह नहाते ही (तात्कालिक क्रिया) मंदिर चला गया।

संयुक्त क्रिया

जब दो या दो से अधिक क्रिया-धातुओं के योग से क्रियापद बनता है तो उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं। संयुक्त क्रिया में कई क्रियाओं के संयुक्त हो जाने से एक क्रिया का अर्थ निकलता है, जैसे –

- वह खाना खा चुका होगा।
- पानी बरसने लगा है।
- मैं यहाँ रोज आ जाया करता हूँ।
- दोपहर में लोग सो रहे होते हैं।

इन सभी वाक्यों में पहला क्रियापद मुख्य क्रिया है तथा बाद के सभी क्रियापद सहायक क्रियाएँ हैं और मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रियाओं को मिलकर बने क्रियापद-समूह संयुक्त क्रियाएँ हैं। सहायक क्रिया एक भी हो सकती है। (पढ़ता है) और एक से अधिक भी जैसा कि ऊपर के वाक्यों में है।

विशेष

(1) यदि किसी वाक्य में प्रयुक्त कोई क्रिया स्वतः घटित हो रही हो तो वहाँ उस क्रिया को अकर्मक क्रिया माना जाता है –

जैसे – पेड़ से पत्ता गिर रहा है।
बूंद-बूंद से घड़ा भरता है।

(2) यदि किसी वाक्य में गत्यार्थक क्रिया का (आना, जाना, चलना) प्रयोग हो रहा है एवं उसके साथ वाक्य में आने/जाने/चलने का स्थानवाचक शब्द भी लिखा हो तो वहाँ इन क्रियाओं का सकर्मक माना जाता है।

जैसे – बच्चा घर गया।
वह स्कूल आ रही है।

काल के आधार पर क्रिया

जिस काल के अनुसार क्रिया सम्पन्न होती है, उसके अनुसार क्रिया के तीन भेद हैं।

1. भूतकालिक क्रिया
2. वर्तमान कालिक क्रिया
3. भविष्यत् कालिक क्रिया

1. भूतकालिक क्रिया – क्रिया का वह रूप जिससे बीते समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता है, भूतकालिक क्रिया कहलाती हैं।

जैसे –

- वह विद्यालय चला गया।
- उसने बहुत सुंदर गीत गाया।

2. वर्तमान कालिक क्रिया – क्रिया का वह रूप जिसमें वर्तमान समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता है, वर्तमान कालिक क्रिया कहलाती हैं।

जैसे –

- अनुष्का अखबार पढ़ रही हैं।
- अनिल हॉकी खेल रहा हैं।
- सुमित खाना खा रहा हैं।

3. भविष्यत् कालिक क्रिया – क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा आने वाले समय में कार्य सम्पन्न होने का बोध होता है, उसे भविष्यत् कालिक क्रिया कहते हैं।

जैसे –

- रेखा द्वितीय श्रेणी अध्यापक परीक्षा की तैयारी करेगी।
- हरीश दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेगा।
- कविता सर्दी की छुट्टियों में ननिहाल जाएगी।

अन्य क्रियाएँ

1. सामान्य क्रिया – जब किसी वाक्य में एक ही धातु से बनी हुई किसी अकेले क्रिया का प्रयोग हो रहा हो, तो वहाँ वह सामान्य क्रिया कहलाती हैं।

जैसे –

- राकेश दिल्ली गया।
- सुमन खाना बनाएगी।
- रेखा ने गीत गाया।

2. सजातीय क्रियाएँ – जिस क्रिया के साथ उससे बनी हुई भाववाचक संज्ञा का कर्म के रूप में प्रयोग होता है, उसे सजातीय क्रिया कहते हैं।

अर्थात् – जब किसी वाक्य में कर्म एवं क्रिया पद दोनों एक ही धातु के बने होते हैं, वहाँ प्रयुक्त क्रिया सजातीय क्रिया कहलाती हैं।

जैसे –

- राजू कई खेल-खेलता है।
- सीता मधुर हँसी-हँसती है।
- कृष्ण अच्छी चाल-चलता है।

3. अनुकरणात्मक क्रिया – किसी ध्वनि (आवाज/बोली) के अनुकरण पर जो क्रिया बनती है, उसे अनुकरणात्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे –

- बकरी की आवाज – में-में से मिमियाना
- तोते की आवाज – टें-टें से टिटियाना
- हवा की आवाज – सन-सन से सनसनाना

पक्षियों की आवाजें

कूकना (कू-कू)	–	कोयल
रँभाना	–	गाय
कुकड़ू-कुकड़ू	–	मुर्गा
डकारना	–	साँड
गुटरगूँ	–	कबूतर
खोखियाना	–	भालू
काँव-काँव	–	कौआ
हिनहिनाना	–	घोड़ा
भिन्न-भिन्नाना	–	मक्खी
भौंकना	–	कुत्ता
झंकरना (झीं-झीं)	–	झींगुर
दहाड़ना	–	शेर
गुनगुनाना	–	भंवरा
चिंघाड़ना	–	हाथी
भनभनाना	–	मच्छर
बलबलाना	–	ऊँट

क्रिया के संबंध में वाच्य

वाच्य – वाच्य क्रिया का रूपांतरण है, जिसके द्वारा यह पता चलता है कि वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता है।

वाच्य के भेद – वाच्य के तीन भेद होते हैं।

1. कर्तृवाच्य
2. कर्मवाच्य
3. भाववाच्य

1. कर्तृवाच्य – जिस वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध होता है, वह कर्तृवाच्य कहलाता है।

जैसे –

- राम ने खाना खाया।
- वह शहर गया।
- रमा हँसती है।

नोट – कर्तृवाच्य सकर्मक और अकर्मक दोनों क्रियाओं से बनता है।

2. कर्मवाच्य – वह वाच्य जिसमें कर्म की प्रधानता का बोध हो, कर्मवाच्य कहलाता है।

जैसे –

- गाना गाया गया।
- पेड़ काटा गया।
- पुस्तक लिखी गई।

नोट – कर्मवाच्य सकर्मक क्रिया से बनता है।

3. भाववाच्य – जिस वाक्य में भाव या क्रिया की प्रधानता हो, वह भाववाच्य कहलाता है।

जैसे –

- सुरेश से चला नहीं जाता।
- मुझसे दौड़ा नहीं जाता।
- कमला से हँसा नहीं जाता।

नोट – भाववाच्य अकर्मक क्रिया से बनता है।

वाच्य के प्रयोग

वाक्य में क्रिया द्वारा कर्ता, कर्म, भाव का अनुसरण करने के कारण, वाच्य प्रयोग को तीन भागों में बाँटा गया है –

1. कर्तरि प्रयोग
2. कर्मणी प्रयोग
3. भावे प्रयोग

1. कर्तरि प्रयोग – जब वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष कर्ता के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार हों, तब कर्तरि प्रयोग होता है।

जैसे –

- राम आम खाता है।
- श्याम अखबार पढ़ता है।

2. कर्मणी प्रयोग – जब वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष कर्म के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार हो, तब कर्मणी प्रयोग होता है।

जैसे –

- विमला ने किताब पढ़ी।
- मुकेश ने गीत गाया।
- लड़की द्वारा पत्र को पढ़ा गया।

3. भावे प्रयोग – जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष कर्ता अथवा कर्म के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार न होकर सदैव पुल्लिंग, एकवचन, अन्य पुरुष में हो, तब भावे प्रयोग होता है।

जैसे –

- कमल से दौड़ा नहीं जाता।
- सोनू से हँसा नहीं जाता।
- मुझसे रोया नहीं जाता।
- पक्षियों से उड़ा नहीं जाता।

क्रिया की वृत्ति

वृत्ति का शाब्दिक अर्थ – मनःस्थिति या मूड

क्रिया के जिस रूप द्वारा लेखक या वक्ता के उद्देश्य/मंतव्य, मनःस्थिति का पता चलता है, वह क्रिया वृत्ति कहलाता है।

वृत्ति के भेद – (7)

(i) **संदेहार्थक वृत्ति** – क्रिया के जिस रूप से लेखक के मन में उत्पन्न होने वाले संदेह/शंका का भाव प्रकट होता है, तो वह संदेहार्थक वृत्ति कहलाती है।

जैसे –

- संतोष गाँव पहुँच गई होगी।
- भावेश पत्र लिख रहा होगा।
- रमेश ने खाना खा लिया होगा।

(ii) **संभावनार्थक वृत्ति** – जिस वृत्ति से किसी क्रिया के भविष्य में हो सकने के बारे में पता चलता है, उसे संभावनार्थक वृत्ति कहते हैं।

जैसे –

- आप अच्छे वक्ता बन सकते हों।
- शायद कल बारिश आए।
- भारत-पाकिस्तान के बीच होने वाला क्रिकेट मैच रुक सकता है।
- पिताजी शाम को यहाँ आ सकते हैं।

(iii) **आज्ञार्थक वृत्ति** – यदि किसी वाक्य में आज्ञा/आदेश, अनुरोध, निषेध, चेतावनी, प्रार्थना आदि का बोध हो, वह आज्ञार्थक वृत्ति कहलाता है।

जैसे –

- अजय तुम यहाँ से चले जाओ। (आज्ञा)
- रेखा इधर आओ। (आदेश)
- मेरा काम जरूर कर दीजिएगा। (अनुरोध)
- आप मुझे अपनी पुस्तक दे सकेंगे। (निवेदन)
- तुम जल्दी चले जाना नहीं तो गाड़ी निकल जाएगी। (चेतावनी)

(iv) **संकेतार्थक वृत्ति** – यदि किसी वाक्य में संकेत के भाव प्रकट हो, तो वहाँ संकेतार्थक वृत्ति होगी।

जैसे –

- बारिश होगी तो हम भी पिकनिक पर चलेंगे।

- यदि तुम पढ़ते तो पास हो जाते।
- छुट्टी होती तो हम गाँव चले जाते।

(v) **निश्चयार्थक वृत्ति** – निश्चयार्थक वृत्ति में वक्ता की निश्चित भाव की मानसिक अभिवृत्ति का पता चलता है।

जैसे –

- मेरे पिताजी बहुत मेहनती हैं।
- उसने अपना कार्य कर लिया है।
- अब गाड़ी जा चुकी है।
- सोहन अच्छा वक्ता है।

(vi) **इच्छार्थक वृत्ति** – इस वृत्ति में वक्ता की इच्छा, वरदान, अभिशाप आदि का पता चलता है।

जैसे –

- आपकी यात्रा मंगलमय हो।
- बेटे जल्दी ही तुम्हारी नौकरी लग जाए।
- भगवान तुम्हें नरक में डाले।
- भगवान सबका भला करे।

(vii) **प्रश्नार्थक वृत्ति** – जब वक्ता के मन में जिज्ञासा हो और वह उसको शांत करने के लिए प्रश्न करें तो वह प्रश्नार्थक वृत्ति कहलाती है।

जैसे –

- यह किताब कितने दिन में बन जायेगी।
- अब मुझे किस परीक्षा की तैयारी करनी चाहिए।
- आपका जन्मदिन कब है?
- आपका नाम क्या है?

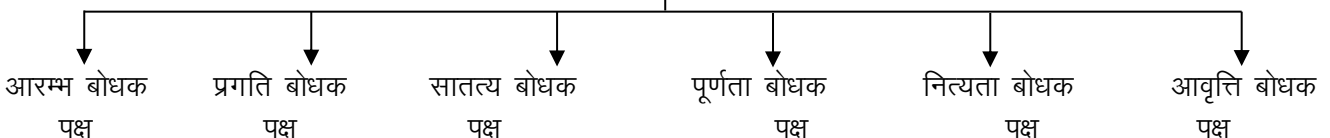
क्रिया के पक्ष

पक्ष – कोई कार्य किसी कालावधि के बीच होता है, जो आरंभ से लेकर अन्त तक फैला हुआ होता है। इस क्रिया में क्रिया के घटित होने के विभिन्न पहलुओं, प्रतिक्रियाओं को देखना पक्ष कहलाता है।

क्रिया के जिस रूप से क्रिया के होने की प्रक्रियागत अवस्था का बोध होता है, वह पक्ष कहलाता है।

पक्ष के भेद – पक्ष के मुख्यतः 6 भेद होते हैं।

पक्ष के भेद



1. **आरम्भ बोधक पक्ष** – क्रिया का वह रूप जिससे किसी कार्य के आरम्भ होने का बोध हों, वह आरम्भबोधक पक्ष कहलाता है।

जैसे –

- अतुल स्कूल जाने लगा है।
- आजकल अवनी भी पढ़ने लगी हैं।
- नवीन बोलने लगा है।
- साक्षी पुस्तक पढ़ने लगी हैं।

2. **प्रगति बोधक पक्ष** – यदि किसी वाक्य में प्रयुक्त क्रिया में बढ़ोतरी या वृद्धि होने का भाव प्रकट हो तो वहाँ प्रगति बोधक पक्ष माना जाता है।

जैसे –

- रीतिका पुस्तक पढ़ती ही जा रही थी।
- मेलों में भीड़ बढ़ती ही जा रही थी।
- वर्षा होती ही जा रही थी।

3. **सातत्य बोधक पक्ष** – क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया के निरंतर रूप से चलते रहने का संकेत मिलता है। यह निरंतरता वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्यत् काल किसी में हो सकती है।

जैसे –

- शिक्षक कक्षा में पढ़ा रहे थे।
- श्याम पुस्तक पढ़ रहा है।
- मानसी लिख रही है।

4. **पूर्णता बोधक पक्ष** – क्रिया के जिस रूप द्वारा कार्य के पूर्ण हो जाने का बोध हो, वहाँ पूर्णता बोधक पक्ष माना है।

जैसे –

- स्नेहा स्नान कर चुकी है।
- गाड़ी जा चुकी है।
- निराला ने पुस्तक पढ़ ली है।

5. **नित्यता बोधक पक्ष** – क्रिया के जिस रूप द्वारा किसी कार्य के नित्य होने का बोध होता है, वहाँ नित्यता बोधक पक्ष माना जाता है। क्रिया पहले भी होती थी, अभी भी होती है और आगे भी होती रहेगा। **नित्यता बोधक पक्ष को अपूर्णता बोधक पक्ष भी कहा जाता है।**

जैसे –

- मेरे पिताजी किसान हैं।
- सूर्य पूर्व दिशा से उदय होता है।
- सूर्यास्त के समय आसमान में लालिमा छा जाती है।

6. **आवृत्ति बोधक पक्ष** – जब किसी वाक्य में एक ही कार्य के बार-बार घटित होने का बोध होता है तो वहाँ आवृत्ति बोधक पक्ष माना जाता है।

जैसे –

- डाकिया पत्रों का वितरण करता है।
- आरती स्कूल जाती है। (रोजाना)
- होली पर सब लोग घरों की सफाई करते हैं। (हर बार)

नोट – आवृत्ति बोधक पक्ष को अभ्यास बोधक पक्ष भी कहा जाता है।